The Panchastikay-Sara (Liturgy of the Five Realities)

Verse 1 Prakrit: इंदसदवदियाणं तिहुअगहिदमधुरविसदवक्काणं। अंतातीदगुणाणं णमो जिणाण जिदभवाणं।। १।। **Hindi:** सौ इन्द्र जिन्हें वन्दना करते हैं, जिनके वचन तीन लोक के जीवों का हित करने वाले मधुर एवं विशद हैं, जो अनन्त गुणों के धारक हैं, और जिन्होंने चनुर्गति रुप संसार को जीत लिया है, मैं उन जिनेन्द्र देव को नमस्कार करता हूँ।। १।। **English:** I offer my salutations to the Jinas, who are venerated by a hundred Indras, whose speech is sweet, clear, and beneficial to the inhabitants of the three worlds, who possess infinite and transcendental attributes, and who have triumphed over the cycle of the four states of existence.

Verse 2 Prakrit: समणमुहुग्गदमट्ठं चदुग्गदिणिवारणं सणिव्वाणं। एसो पणमिय सिरसा समयमिमं सुणह वोच्छामि।। २।। **Hindi:** जो सर्वज्ञ-वीतराग देव के मुख से प्रकट हुआ है, चारों गतियों का निवारण करने वाला है और निर्वाण का कारण है, उस जीवादि पदार्थ समूह को अथवा अर्थ समयसार को शिर से नमस्कार कर मैं इस पच्चास्तिकाय रुप समयमसार को कहूँगा। हे भव्यजन! उसे तुम सुनो।। २।। **English:** Having prostrated my head before the collection of ontological categories beginning with the Soul—the essence of the doctrine—which emerged from the mouth of the Omniscient and Passionless Lord, which averts the four states of rebirth and leads to liberation, I shall expound this Panchastikaya-sara. O noble souls, attend to this Samaya/doctrine.

Verse 3 Prakrit: समवाओ पचण्ह समउत्ति जिणुत्तमेहिं पण्णत्तं। सो चेव हवदि लोओ तत्तो अमिओ अलोओ खं।। ३।। **Hindi:** जीव, पुदगल धर्म, अधर्म और आकाश इन पाँचों का समुदाय 'समय' है ऐसा श्री जिनेन्द्र देव ने कहा है। उक्त पाँचों का समुदाय ही लोक है और उसके आगे अपरिमित आकाश अलोक है।। ३।। **English:** The supreme Jinas have declared that the congregation of the five entities—Soul, Matter, Principle of Motion, Principle of Rest, and Space—is 'Samaya.' This very congregation constitutes the Universe (Loka), and beyond it lies the non-universe (Aloka), consisting of infinite Space.

Verse 4 Prakrit: जीवा पुग्गलकाया धम्माधम्मा तहेव आयासं। अत्थित्तिम्हि य णियदा अणण्णमइया अणुमहंता।। ४।। **Hindi:** अनन्त जीव, अनन्त पुद्गल, एक धर्म, एक अधर्म और एक आकाश ये पाँचों अपने सामान्य विशेष अस्तित्व में सदा नियत हैं, द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा उस अस्तित्व गुण से अभिन्न रुप हैं, तथा बहुप्रदेशी हैं। [अत इन्हें अस्तिकाय कहते हैं।]। ४।। **English:** Infinite souls, infinite matter, a single principle of motion, a single principle of rest, and space are eternally fixed in their general and specific existence. From the substantial point of view, they are inseparable from the quality of existence and are multi-spatial (Astikayas).

Verse 5 Prakrit: जेसिं अत्थिसहाओ गुणेहि सह पज्जएहिं विविहेहिं। ते होंति अत्थिकाया णिप्पण्णं जेहिं तइलुक्कं।। ५।। **Hindi:** जिनका अस्तित्व स्वभाव अनेक गुण और अनेक पर्यायों के साथ सुनिश्चित है वे अस्तिकाय कहलाते हैं। यह त्रैलोक्य उन्हीं अस्तिकायों से बना हुआ है।। ५।। **English:** Those whose existential nature is established through various attributes and modes are designated as Astikayas. The three worlds are composed of these very multi-spatial entities.

Verse 6 Prakrit: ते चेव अत्थिकाया तेकालियभावपरिणदा णिच्चा। गच्छंति दवियभावं परियट्टणलिंगसंजुत्ता।। ६।। **Hindi:** ऊपर कहे हुए जीवादि पाँच अस्तिकाय परिवर्तनलिंग अर्थात् काल के साथ मिलकर द्रव्य व्यवहार को प्राप्त हो जाते हैं - द्रव्य कहलाने लगते हैं। ये सभी पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा त्रिकालवर्ती पर्यायों में परिणमन

करने के कारण अनित्य हैं - उत्पाद, व्यय रुप हैं और द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा स्वरुप में विश्रान्त होने के कारण नित्य हैं - ध्रौव्यरुप हैं।। ६।। **English:** These five Astikayas, when associated with the mark of change—namely, Time—acquire the designation of substances (Dravyas). From the modal perspective, they are transitory as they transform through past, present, and future modes; however, from the substantial perspective, they are eternal, persisting in their essential nature.

Verse 7 Prakrit: अण्णोण्ण पविसंता दिता ओगासमण्णमण्णस्स। मेलंता वि य णिच्चं सगं सभावं ण विजहंति।। ७।। **Hindi:** उक्त छहों द्रव्य यद्यपि परस्पर एक दूसरे में प्रवेश कर रहे हैं, एक दूसरे को अवकाश दे रहे हैं और निरन्तर एक दूसरे से मिल रहे हैं तथापि अपना स्वभाव नही छोड़ते।। ७।। **English:** Though these six substances mutually interpenetrate, grant space to one another, and are in constant contact, they never abandon their own intrinsic nature.

Verse 8 Prakrit: सत्ता सव्वपयत्था सविस्सरूवा अणंतपज्जाया। भंगुप्पादधुवत्ता सप्पडिवक्खा हवदि एक्का।। ८।। **Hindi:** सत्ता सम्पूर्ण पदार्थों में स्थित है, अनेकरुप है, अनन्त पर्यायों से सहित है, उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य स्वरुप है, एक है तथा प्रतिपक्षी धर्मों से युक्त है।। ८।। **English:** Existence is inherent in all substances; it is multiform, accompanied by infinite modes, and characterized by origination, destruction, and persistence. It is unitary yet possessed of dialectically opposing characteristics.

Verse 9 Prakrit: दवियदि गच्छदि ताईं ताईं सब्भावपज्जयाईं जं। दवियं तं भण्णंतं अणण्णभूतं तु सत्तादो।। ९।। **Hindi:** जो उन उन गुण-पर्यायों को प्राप्त होता है उसे द्रव्य कहते हैं, यह द्रव्य सत्ता से अभिन्न रहता है। सत्ता ही द्रव्य कहलाती है।। ९।। **English:** That which attains various essential modes is termed substance. This substance is ontologically inseparable from existence; indeed, existence itself is called substance.

Verse 10 Prakrit: दव्वं सल्लक्खणियं उप्पादव्वयधुवत्तसंजुत्तं। गुणपज्जवासय वा तं भण्णंति सव्वण्हू।। १०।। **Hindi:** जो सत्ता रूप लक्षण से सहित है अथवा उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से युक्त है अथवा गुण और पर्यायों का आश्रय है उसे सर्वज्ञदेव द्रव्य कहते हैं।। १०।। **English:** The Omniscient Lords declare that substance is characterized by existence, associated with origination, destruction, and persistence, and serves as the substratum for attributes and modes.

Verse 11 Prakrit: उप्पत्तीव विणासो दव्वस्स य णत्थि अत्थि सब्भावो। विगमुप्पादधुवत्तं करेंति तस्सेव पज्जाया।। ११।। **Hindi:** द्रव्य का न उत्पाद होता है और न विनाश। वह सदा अस्तित्व रुप रहता है। उसकी पर्याय ही उत्पाद, व्यय तथा धौव्य रुप परिणमन करती है। [द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा द्रव्य अपरिणामी है और पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा परिणामी]।। ११।। **English:** There is neither origination nor destruction of the substance itself; it persists in a state of eternal existence. It is only its modes that undergo the triad of origination, destruction, and persistence.

Verse 12 Prakrit: पज्जयविजुदं दव्वं दव्वविजुत्ता य पज्जया णत्थि। दोण्हं अणण्णभूदं भावं समणा परुविति।। १२।। **Hindi:** न द्रव्य, पर्याय से रहित होता है और न पर्यायें द्रव्य से रहित होतीं हैं। महामुनि दोनों का अभेदस्वरूप वर्णन करते है।। १२।। **English:** Substance cannot exist devoid of modes, nor can modes exist independent of substance. The great ascetics describe the nature of these two as an inseparable unity.

Verse 13 Prakrit: दव्वेण विणा ण गुणा गुणेहिं दव्वं विणा ण संभवदि। अव्वदिरित्तो भावो दव्वगुणाणं हवदि तम्हा।। १३।। **Hindi:** द्रव्य के बिना न गुण ठहर सकते हैं और न गुणों के बिना द्रव्य ही ठहर सकता है अतः द्रव्य

और गुणों के बीच अव्यतिरेकभाव होता है - दोनों अभिन्न रहते हैं।। १३।। **English:** Attributes cannot exist without substance, and substance is not possible without attributes. Therefore, an inseparable relationship (Avyatireka-bhava) exists between substance and its attributes; they remain unified.

Verse 14 Prakrit: सिय अत्थि णत्थि उहयं अव्वत्तव्वं पुणो य तत्तिदयं। दव्वं खु सत्तभंगं आदेसवसेण संभवदि।। १४।। **Hindi:** निश्चय से द्रव्य, विवक्षा के वश निम्नलिखित सप्तभंग रुप होता है जैसे - १ स्यादस्ति - किसी प्रकार है, २ स्यान्नास्ति - किसी प्रकार नहीं है, ३ स्यादुभयम् - किसी प्रकार अस्तिनास्ति दोनों रुप है, ४ स्यादवक्तव्यम् - किसी प्रकार अवक्तव्य है, ५ स्यादस्ति अवक्तव्यम् - किसी प्रकार अस्तिरुप होकर अवक्तव्य है, ६ स्यान्नास्ति अवक्तव्यम् - किसी प्रकार नास्ति रुप होकर अवक्तव्य है और ७ स्यादस्तिनास्ति अवक्तव्यम् - किसी प्रकार अस्ति-नास्ति दोनों रुप होकर अवक्तव्य है।। १४।। **English:** Indeed, according to the requirements of predication, a substance is described through sevenfold qualifying logic (Saptabhangi): 1. From a certain perspective, it is; 2. From a certain perspective, it is not; 3. From a certain perspective, it is and is not; 4. From a certain perspective, it is indescribable; 5. From a certain perspective, it is and is indescribable; 6. From a certain perspective, it is not and is indescribable; 7. From a certain perspective, it is, is not, and is indescribable.

Verse 15 Prakrit: भावस्स णत्थि णासो णत्थि अभावस्स चेव उप्पादो। गुणपज्जयेसु भावा उप्पादवए पकुव्वंति।। १५।। **Hindi:** सत् पदार्थों का नाश नहीं होता और न असत् का उत्पाद ही। पदार्थ गुण और पर्यायों में ही उत्पाद तथा व्यय करते हैं।। १५।। **English:** There is no destruction of that which is existent, nor is there origination of that which is non-existent. Entities undergo origination and destruction only within the framework of their attributes and modes.

Verse 16 Prakrit: भावा जीवादीया जीवगुणा चेदणा व उबओगो। सुरणरणारयतिरिया जीवस्स य पज्जया बहुगा।। १६।। **Hindi:** जीव आदि छह पदार्थ भाव है, चेतना और उपयोग जीव के गुण है, देव मनुष्य, नारकी और तिर्य्यंच ये जीव की अनेक पर्यायें है।। १६।। **English:** Entities such as the soul are psychic dispositions (Bhavas); sentience and cognitive application are the attributes of the soul. Celestial, human, hellish, and sub-human states are the manifold modes of the soul.

Verse 17 Prakrit: णट्ठों मणुसभावो देहो देवो हवेदि इदरों वा। उभयत्थ जीवभावो ण णस्सदि ण जायदे अण्णो।। १७।। **Hindi:** मनुष्यपर्याय से नष्ट हुआ जीव देव अथवा अन्यपर्याय रुप हो जाता अवश्य है, परन्तु जीवत्वमाव का सद्भाव दोनों ही पर्यायों में रहता है। पूर्व जीव का न तो नाश ही होता है और न अन्य जीव का उत्पाद ही।। १७।। **English:** When the human mode is destroyed, the soul indeed becomes a celestial being or another mode; however, the essential soul-nature persists in both states. There is neither the destruction of the former soul nor the creation of a new one.

Verse 18 Prakrit: सो चेव जादि मरणं जादि ण णट्ठों ण चेव उप्पण्णो। उप्पण्णो व विणट्ठो देवो मणुसोत्ति पज्जाओ।। १८।। **Hindi:** वही जीव उपजता है जो कि मरण को प्राप्त होता है, स्वभाव से जीव न नष्ट होता है और न उपजता ही है। देव उत्पन्न हुआ और मनुष्य नष्ट हुआ, यहा पर्याय ही तो उत्पन्न हुआ और पर्याय ही नष्ट हुआ।। १८।। **English:** The same soul that undergoes death is the one that is born; by nature, the soul is neither destroyed nor created. When it is said a celestial is born and a human has died, it is only the mode that has originated or ceased.

Verse 19 Prakrit: एवं सदो विणासो असदो जीवस्स णत्थि उप्पादो। तावदिओ जीवाणं देवो मणुसोत्ति गदिणामों।। १९।। **Hindi:** इस प्रकार संत रुप जीव का न नाश होता है औन न असनत् रुप जीव का उत्पाद ही। जीवों में जो देव अथवा मनुष्य का व्यवहार होता है वह सब गति नामकर्म के उदय से होने वाला विकार है।। १९।।

English: Thus, there is no destruction of the existent soul, nor is there origination of a non-existent soul. The designations of 'celestial' or 'human' are merely modifications resulting from the fruition of the Gati-Nama karma.

Verse 20 Prakrit: णाणावरणादीया भावा जीवेण सुट्ठु अणुबद्धा। तेसिमभावं किच्चा अभूदपुव्वो हवदि सिद्धो।। २०।। **Hindi:** इस संसारी जीव ने अनादिकाल से ज्ञानावरणादि कर्मपर्यायों का अतिशय बन्ध कर रक्खा है अत उनका अभाव - क्षय करके ही यह जीव अभूतपूर्व सिद्धपर्याय को प्राप्त हो सकता है।। २०।। **English:** This mundane soul has been tightly bound by karma-modes like Knowledge-obscuring karma since beginningless time. Only by achieving their non-existence or destruction can the soul attain the unprecedented mode of the Perfected One (Siddha).

Verse 21 Prakrit: एवं भावमभावं भावाभावं अभावभावं च। गुणपज्जयेहिं सहिदो संसरमाणों कुणदि जीवो।। २१।। **Hindi:** इस प्रकार गुण और पर्यायों के साथ पाँच परावर्तन रुप संसार में भ्रमण करता हुआ यह जीव कभी भाव को करता है - देवादि नवीन पर्याय की धारण करता है, कभी अभाव को करता है - मनुष्यादि पूर्व पर्याय का नाश करता है, कभी भाव का अभाव करता है - वर्तमान देवादि पर्याय का नाश करता है और कभी अभाव का भाव करता है - मनुष्यादि अभावस्वरुप पर्याय का उत्पाद करता है।। २१।। **English:** Thus, wandering through the cycle of transmigration with its attributes and modes, the soul sometimes assumes a state (Bhava), sometimes undergoes cessation (Abhava), sometimes experiences the cessation of a state, and sometimes the manifestation of a non-state.

Verse 22 Prakrit: जीवा पुग्गलकाया आयासं अत्थिकाया सेसा। अमया अत्थित्तमया कारणभूदा हि लोगस्स।। २२।। **Hindi:** जीव, पुदगल धर्म, अधर्म और आकाश ये पाँच द्रव्य अस्ति स्वरूप तथा बहुप्रदेशी होने के कारण अस्तिकाय कहलाते हैं। ये अकृत्रिम है, शाश्वत हैं और लोक के कारणभूत है।। २२।। **English:** Soul, Matter, Space, and the remaining principles (Motion and Rest) are called Multi-spatial Entities (Astikayas) due to their existence and spatial extension. They are uncreated, eternal, and the fundamental causes of the universe.

Verse 23 Prakrit: सब्भावसभावाणं जीवाणं तं च पोग्गलाणं च। परियट्टणसंभूदो कालो णियमेण पण्णत्तो।। २३।। **Hindi:** सत् अर्थात् उत्पाद, व्यय ध्रौव्य रुप स्वभाव से संयुक्त जीव और पुदगलों का जो परिणमन दृष्टिगोचर होता है उससे काल द्रव्य का अस्तित्व सिद्ध हो जाता है।। २३।। **English:** The existence of the substance of Time is necessarily established by the observable transformation of souls and matter, which are characterized by the nature of origination, destruction, and persistence.

Verse 24 Prakrit: बवगदपणवण्णरसो अटठफासो य। अगुरुलहुगो अमुत्तो वट्टणलक्खो य कालोत्ति।। २४।। **Hindi:** काल द्रव्य पाँच वर्ण, पाँच रस, दो गन्ध, और आठ स्पर्शों से रहित है, षड़गुणी हानिवृद्धि रूप अगुरुलघुगुण से युक्त है, अमूर्तिक है और वर्तनालक्षण से सहित है।। २४।। **English:** The substance of Time is devoid of five colors, five tastes, two smells, and eight touches. It possesses the attribute of being neither heavy nor light (Agurulaghu), is formless, and is characterized by the function of facilitating change (Vartana).

Verse 25 Prakrit: समओ णिमिसो कट्ठा कलाय णाली तदो दिवारत्ती। मासो दु अयण संवच्छरोत्ति कालो परायत्तो।। २५।। **Hindi:** समय निमेष, काष्ठा, कला नाडी, दिनरात, मास, ऋतु, अयन और वर्ष यह सब व्यवहार काल है। चूंकि यह व्यवहार काल सूर्योदय सूर्यास्त आदि पुद्गल द्रव्य के निमित्त से उत्पन्न होता है।। २५।। **English:** Samaya, Nimisha, Kashta, Kala, Nadi, day and night, month, season, half-year, and

year constitute relative time (Vyavahara-kala). This relative time is dependent upon the movement of matter, such as the rising and setting of the sun.

Verse 26 Prakrit: णत्थि चिरं वा खिप्पं मत्तारहिदं तु सा वि खलु मत्ता। पुग्गलदव्वेण विणा तम्हा कालो दु पदुच्चभवो।। २६।। **Hindi:** काल की मात्रा - मर्यादा के बिना विलम्ब और शीघ्रता का व्यवहार नहीं हो सकता अतः उसका वर्णन अवश्य करना चाहिये और चूंकि काल की मात्रा पुद्गल द्रव्य के बिना प्रकट नहीं हो सकती इसलिये उसे पुद्गल द्रव्य के निमित्त से उत्पन्न हुआ माना जाता है।। २६।। **English:** The concepts of 'long duration' or 'quickness' cannot exist without a measure of time; therefore, its description is essential. Since the measure of time cannot manifest without matter, it is considered to arise in dependence upon material substances.

Verse 27 Prakrit: जीवोत्ति हवदि चेदा उवओगविसेसिदो पहू कत्ता। भोत्ता य देहमत्तो ण हि मुत्तो कम्मसंजुत्तो।। २७।। **Hindi:** जो निश्चय नय की अपेक्षा भावप्राणों से और व्यवहार नय की अपेक्षा द्रव्य प्राणों से जीवित रहता है वह जीव कहलाता है। यह जीव निश्चय नय की अपेक्षा चेतनामय है... शरीर के बराबर रहने से स्वदेहमात्र हैं, मूर्ति से रहित है, और कर्मसंयुक्त है। यह संसारी जीव का स्वरुप है।। २७।। **English:** That which lives through psychic pranas from the absolute point of view and through material pranas from the relative point of view is the Soul. It is sentient, characterized by specific cognitive application (Upayoga), is a lord, a doer, an enjoyer, co-extensive with the body, formless, and associated with karma. This is the nature of the mundane soul.

Verse 28 Prakrit: कम्ममलविप्पमुक्को उड्ढं लोगस्स अंतमधिगंता। सो सव्वणाणदरिसी लहदि सुहमणिंदियमणंतं।। २८।। **Hindi:** जब यह जीव कर्ममल से विप्रमुक्त होता है तब सर्वज्ञ और सर्वदर्शी होकर ऊर्ध्वगति स्वभाव के कारण लोक के अन्तिम भाग - सिद्धक्षेत्र में जा पहुँचता है और वहाँ अनन्त अतीन्द्रिय सुख प्राप्त करने लगता है।। २८।। **English:** When this soul is entirely liberated from the impurity of karma, becoming all-knowing and all-seeing, it ascends due to its inherent nature to the summit of the universe—the realm of the Siddhas—and attains infinite, supersensuous bliss.

Verse 29 Prakrit: जादो सयं स चेदा सव्वण्हू सव्वलागदरसी य। पप्पोदि सुहमणंतं अव्वाबाधं सगममुत्तं।। २९।। **Hindi:** जो आत्मा पहले संसार अवस्था में इन्द्रियजनित बाधा सहित पराधीन और मूर्तिक सुख का अनुभव करता था अब वही चिदात्मा मुक्त अवस्था में सर्वज्ञ और सर्वदर्शी होकर अनन्त अव्याबाध स्वाधीन और अमूर्तिक सुख का अनुभव करता है।। २९।। **English:** That very consciousness, which previously in the mundane state experienced dependent, hindered, and material pleasure, now as a liberated soul—omniscient and all-seeing—experiences infinite, unhindered, independent, and formless bliss.

Verse 30 Prakrit: पाणेहिं चदुहिं जीवदि जीवस्सदि जो हु जीविदो पुव्व। सो जीवो पाणा पुण बलमिंदियमाउ उस्सासो।। ३०।। **Hindi:** जो चार प्राणों के द्वारा वर्तमान में जीवित है, आगे जीवित होगा और पहले जीवित था वह जीव है। जीव के चार प्राण है - बल, इन्द्रिय, आयु और उच्छवास।। ३०।। **English:** That which lives currently, will live in the future, and lived in the past by means of the four pranas is the Soul. The pranas are: power (bala), senses (indriya), lifespan (ayu), and respiration (ucchvasa).

Verse 31 Prakrit: अगुरुलहुगा अणंता तेहिं अणंतहिं परिणदा सब्बे। देसेहिं असंखादा सियलोगं सब्वमावण्णा।। ३१।। **Hindi:** अगुरुलघुगुण अनन्त है, समस्त जीव उन अनन्त अगुरुलघुगुणों के कारण परिणमन करते रहते हैं, सभी जीव प्रदेशों की अपेक्षा असंख्यात हैं - असख्यात प्रदेशों के धारक हैं। उनमें से कितने ही जीव लोकपूर्ण समुद्घात के समय सम्पूर्ण लोक में व्याप्त होते हैं।। ३१।। **English:** The qualities of being neither heavy

nor light (Agurulaghu) are infinite; all souls continuously transform because of these infinite qualities. Every soul is characterized by innumerable spatial units (Pradeshas); some, during the process of cosmic expansion (Samudghata), pervade the entire universe.

Verse 32 Prakrit: केचित्तु अणावण्णा मिच्छादंसअणकसायजोगजुदा। विजुदा य तेहिं बहुगा सिद्धा संसारिणो जीवा।। ३२।। **Hindi:** कितने ही अपने शरीर के प्रमाण अवस्थित रहते है, कितने ही मिथ्यादर्शन, कषाय और योगों से युक्त होने के कारण संसारी हैं और कितने ही उनसे रहित होकर सिद्ध हुए है।। ३२।। **English:** Some souls remain restricted to the dimensions of their bodies. Some are mundane (Samsari), being associated with wrong vision, passions, and activities, while many others, having become free from these, are the Perfected Ones (Siddhas).

Verse 33 Prakrit: जह पउमरायरयणं खित्तं खीरे पभासयदि खीरं। तह देही देहत्थो सदेहमत्तं पभासयदि।। ३३।। **Hindi:** जिस प्रकार दूध में पडा हुआ पदमरागमणि समस्त दूध को व्याप्त कर लेता है, उसी प्रकार शरीर में स्थित आत्मा समस्त शरीर को व्याप्त कर लेता है।। ३३।। **English:** Just as the brilliance of a ruby immersed in milk pervades the entire milk, so does the soul, situated within the body, pervade the entire bodily extent.

Verse 34 Prakrit: सव्वत्थ अत्थि जीवो ण व एक्को एक्ककाय एक्कट्ठो। अज्झवसाणविसिट्ठो चिट्ठदि मलिणो रजमलेहिं।। ३४।। **Hindi:** यह जीव त्रिकालवर्ती समस्त पर्यायों में विद्यमान रहता है... यद्यपि यह जीव एक शरीर में क्षीरनीर की तरह परस्पर मिलकर रहता है तथापि उस शरीर से एक रूप नहीं होता - अपना अस्तित्व पृथक रखता है। यह जीव रागादि भावों से युक्त होने के कारण द्रव्यकर्म रुपी मल से मलिन हो जाता है।। ३४।। **English:** The soul exists across all its past, present, and future modes. Though it resides within a body like milk and water intermingled, it does not become identical with the body—it maintains a distinct existence. Associated with passions, it becomes soiled by the impurity of material karma.

Verse 35 Prakrit: जेसिं जीवसहावो णत्थि अभावो य सब्वहा तस्स। ते होंति भिण्णदेहा सिद्धा वचिगोयरमदीदा।। ३५।। **Hindi:** जिनके कर्मजनित द्रव्यप्राण रूप जीव स्वभाव का सद्भाव नहीं है और शुद्ध चैतन्यरुप भाव प्राणों से युक्त होने के कारण सर्वथा उसका अभाव भी नहीं है, जो शरीर से रहित हैं और जिनकी महिमा वचन के अगोचर है वे सिद्ध जीव हैं।। ३५।। **English:** Those in whom the nature of living through karma-generated material pranas no longer exists—yet who, being endowed with pure sentient psychic pranas, are not entirely non-existent—who are devoid of bodies and whose glory is beyond words, are the Siddha souls.

Verse 36 Prakrit: ण कुदोचि वि उप्पण्णो जम्हा कज्जं ण तेण सो सिद्धो। उप्पादेदि ण किंचि वि कारणमवि तेण ण स होदि।। ३६।। **Hindi:** चूंकि सिद्ध जीव किसी बाहय कारण से उत्पन्न नही हुए है, अतः वे कार्य नहीं है और न किसी कार्य को वे उत्पन्न करते हैं अतः कारण भी नहीं हैं।। ३६।। **English:** Since the Siddha soul is not produced by any external cause, it is not an effect (karya); nor does it produce any effect, therefore it is not a cause (karana).

Verse 37 Prakrit: सस्सधमध उच्छेद भव्वमभव्वं च सुण्णमिदरं च। विण्णाणमविण्णाण ण वि जुज्जदि असदि सब्भावे।। ३७।। **Hindi:** यदि मोक्ष में जीव का सद्भाव नही माना जाय तो उसमें निम्नलिखित आठ भाव संभव नहीं हो सकेंगे। १ शाश्वत, २ उच्छेद, ३ भव्य, ४ अभव्य, ५ शून्य, ६ अशून्य, ७ विज्ञान और ८ अविज्ञान।। ३७।। **English:** If the existence of the soul in liberation is not admitted, then eight states—eternal,

perishable, capable, incapable, void, non-void, sentience, and non-sentience—would be impossible.

Verse 38 Prakrit: कम्माणं फलमेक्को एक्को कज्जं तु णाणमध एक्को। चेदयदि जीवरासी चेदगभावेण तिविहेण।। ३८।। **Hindi:** कुछ जीव... केवल कर्मफल का अनुभव करते हैं, कुछ... इष्टानिष्ट विकल्प रुप कर्म का अनुभव करते हैं और कुछ विशुद्ध ज्ञान का ही अनुभव करते हैं।। ३८।। **English:** The multitude of souls experiences reality through a threefold consciousness: some experience only the fruit of karma, some experience the activity of karma, and some experience pure knowledge.

Verse 39 Prakrit: सब्वे खलु कम्मफल थावरकाया तसा हि कज्जजुदं। पाणित्तमदिक्कंता णाणं विदंति ते जीवा।। ३९।। **Hindi:** सब स्थावर जीव कर्मफल का अनुभव करते हैं, त्रसजीव इष्टानिष्ट पदार्थों में आदान-हान रुप कर्म करते हुए कर्म का उपभोग करते हैं और प्राणीपने के व्यवहार से परे रहने वाले अतीन्द्रिय ज्ञानी अरहन्त-सिद्ध ज्ञान मात्र का वेदन करते हैं।। ३९।। **English:** All immobile (sthavara) beings experience the fruits of karma; mobile (trasa) beings experience karmic activity; and the enlightened ones (Arhats and Siddhas), having transcended the mundane state, experience pure knowledge.

Verse 40 Prakrit: उवओगो खलु दुविहो णाणेण य दंसणेण सजुत्तो। जीवस्स सव्वकालं अणण्णमूद वियाणीहि।। ४०।। **Hindi:** ज्ञान और दर्शन से युक्त होने के कारण उपयोग दो प्रकार होता है, यह उपयोग सदा काल जीव से अनन्यभूत अभिन्न रहता है।। ४०।। **English:** Cognitive application (Upayoga) is of two types: Knowledge and Vision. Know that this application is eternally and inseparably unified with the soul.

Verse 41 Prakrit: आभिणिसुदोधिमणकेवलाणि णाणाणि पंचभेयाणि। कुमदिसुदविभंगाणि य तिण्णि वि णाणेहिं संजुत्ते।। ४१।। **Hindi:** मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान ये पाँच सम्यग्ज्ञान तथा कुमति, कुश्रुत और विभंगावधि ये तीन मिथ्याज्ञान सब मिलाकर ज्ञानोपयोग के आठ भेद है।। ४१।। **English:** Sensory knowledge, scriptural knowledge, clairvoyance, telepathy, and omniscience are the five types of right knowledge; coupled with the three types of wrong knowledge—false sensory, false scriptural, and false clairvoyance—there are eight divisions of knowledge-application.

Verse 42 Prakrit: दंसणमवि चक्खुजुद अचक्खुजुदमवि य ओहिणा सहिय। अणिधणमणंतविसयं केवलियं चावि पण्णत्तं।। ४२।। **Hindi:** चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन और अन्तररहित तथा अनन्त पदार्थों को विषय करने वाला केवलदर्शन ये चार दर्शनोपयोग के भेद है।। ४२।। **English:** Vision-application is declared to be fourfold: visual vision, non-visual vision, clairvoyant vision, and omniscience, which is eternal and encompasses infinite objects.

Verse 43 Prakrit: ण वियप्पदि णाणादों णाणी णाणाणि होंति णेगाणि। तम्हा हु विस्सरूवं भणियं दवियत्ति णाणीहि।। ४३।। **Hindi:** चूंकि ज्ञानी ज्ञानगुणा से पृथक् नही है आर ज्ञान मति आदि के भेद से अनेक रूप है। इसलिये ज्ञानी महर्षियों ने जीवद्रव्य को अनेक रूप कहा है।। ४३।। **English:** Since the knower is not distinct from knowledge, and knowledge is manifold through its divisions like sensory knowledge, enlightened sages have described the soul-substance as multiform.

Verse 44 Prakrit: जदि हवदि दव्वमण्णं गुणदो य गुणा य दव्वदों अण्णे। दव्वाणंतियमधवा दव्वाभावं पकुव्वंति।। ४४।। **Hindi:** यदि द्रव्य, गुण से पृथक हो और गुण भी द्रव्य से पृथक हो तो या तो द्रव्य में अनन्तता आ जावेगी या द्रव्य से पृथक रहने वाले गुण द्रव्य का अभाव ही कर देंगे।। ४४।। **English:** If substance were

distinct from quality, and quality distinct from substance, it would lead to an infinite number of substances or the qualities would negate the existence of the substance itself.

Verse 45 Prakrit: अविभत्तमणण्णत्तं दव्वगुणाण विभत्तमण्णत्तं। णिच्छंति णिच्चयण्हू तब्बिवरीदं हि वा तेसिं।। ४५।। **Hindi:** द्रव्य और गुणों में जो अनन्यत्व - एकरूपता है वह प्रदेश भेद से रहित है। निश्चय के जानने वाले महर्षि द्रव्य और गुणों के बीच प्रदेश भेदरुप अन्यत्व को नही मानते हैं।। ४५।। **English:** The unity between substance and quality is devoid of spatial distinction. Sages who understand the absolute reality do not admit any spatial difference between substance and its attributes.

Verse 46 Prakrit: ववदेसा संठाणा संखा दिसया य होंति ते बहुगा। ते तेसिमणण्णत्ते अण्णत्ते चावि विज्जंते।। ४६।। **Hindi:** उन द्रव्य और गुणों के व्यपदेश - कथन के भेद, आकार, संख्या एवं विषय बहुत प्रकार के होते हैं और वे द्रव्य तथा गुणों की अभेद और भेद दोनों प्रकार की दशाओं में विद्यमान रहते हैं।। ४६।। **English:** Designations, shapes, numbers, and objects of substance and quality are manifold; they persist whether we consider the substance and qualities as identical or distinct.

Verse 47 Prakrit: णाणं धणं च कुव्वदि धणिणं जइ णाणिणं च दुविधेहिं। भण्णंति तह पुधत्तं एयत्तं चावि तच्चण्हू।। ४७।। **Hindi:** जैसे धन पुरुष को धनवान् करता है और ज्ञान शानी। यहां धन जुदा है और पुरुष जुदा है... वैसे ही इन दो प्रकार के मेदामेद कथन के द्वारा वस्तु स्वरूप को जानने वाले पुरुष पृथकत्व और एकत्व का निरुपण करते है।। ४७।। **English:** Just as wealth makes a man wealthy and knowledge makes a man a knower, those who know the truth describe distinction and unity. Distinction is predicated where there is a spatial difference, and unity where it is absent.

Verse 48 Prakrit: णाणी णाणं च सदा अत्थंतरिदो दु अण्णमण्णस्स। दोण्हं अवेदणत्तं पसजदि सम्मं जिणावमदं।। ४८।। **Hindi:** ज्ञान और ज्ञानी दोनों को सदा अर्थान्तर - सर्वथा विभिन्न मानने पर दोनों में जडता का प्रसंग आता है और वह जडता यथार्थ में श्री जिनेन्द्र देव को अभिमत नहीं है।। ४८।। **English:** If the knower and knowledge were regarded as entirely separate entities, both would be rendered insentient—a conclusion that is not acceptable to the Jinas.

Verse 49 Prakrit: ण हि सो समवायादो अत्थंतरिदो दु णाणदो णाणी। अण्णाणीति य वयणं एगत्तप्पसाधगं होदि।। ४९।। **Hindi:** जब कि ज्ञानी - आत्मा ज्ञान से सर्वथा विभिन्न है तब वह उसके समवाय से भी ज्ञानी नही हो सकता... आत्मा अज्ञानी है ऐसा कथन अज्ञान के साथ उसका एकत्व सिद्ध कर देता है।। ४९।। **English:** The knower cannot become a knower through mere inherence (Samavaya) if it were entirely separate from knowledge. To call a soul 'ignorant' proves its identity with ignorance, which further necessitates its identity with knowledge when enlightened.

Verse 50 Prakrit: समवत्ती समवाओ अपुधब्भूदो य अजुदसिद्धो य। तम्हा दव्वणगुणाणं अजुदासिद्धिति णिदिदट्ठा।। ५०।। **Hindi:** गुण और गुणी के बीच अनादिकाल से जो समवर्तित्व - तादात्म्य सम्बन्ध पाया जाता है वही जैनमत में समवाय कहलाता है।। ५०।। **English:** The eternal co-existence and identity between quality and substance is termed Samavaya in the Jain doctrine. Therefore, substance and qualities are declared to be in an inseparable relationship (Ayuta-siddhi).

Verse 51-52 Prakrit: वण्णरसगंधफासा परमाणुपरुविदा विसेसा हि। दव्वादों य अणण्णा अण्णत्तपगासगा होंति।। दंसणणाणाणि तहा जीवणिबद्धाणि णण्णभूदाणि। ववदेसदो पुधत्तं कुव्वंति हि णो सभावादो।। ५१-५२।। **Hindi:** जिस प्रकार परमाणु में कहे गये वर्ण, रस, गन्ध, स्पर्श... निश्चय की अपेक्षा प्रदेश भेद न होने से एक हैं और व्यवहार की अपेक्षा... पृथक् हैं उसी प्रकार जीव के साथ... ज्ञान और दर्शन अभिन्न और भिन्न दोनों रुप हैं।।

५१-५२।। **English:** Just as color, taste, smell, and touch are identical with the atom from the absolute point of view and distinct from the relative point of view, so Knowledge and Vision—unified with the soul—are identical in space yet distinct in designation.

Verse 53 Prakrit: जीवा अणाइणिधणा संता णंता य जीवभावादो। सब्भावदो अणंतो पंचग्गगुणप्पधाणा य।। ५३।। **Hindi:** जीव, सहज चैतन्य लक्षण पारिणामिक भाव की अपेक्षा अनादिनिधन है। औदयिक क्षायोपशमिक और औपशमिक भाव की अपेक्षा सादि सान्त है।। ५३।। **English:** By its inherent sentient nature, the soul is without beginning or end. However, with respect to its states of fruition, suppression, or partial destruction-suppression of karma, it is with beginning and end.

Verse 54 Prakrit: एवं सदो विणासो असदो जीवस्स होइ उप्पादो। इदि जिणवरेहिं भणिदं अण्णोण्णविरुद्धमविरुद्धं।। ५४।। **Hindi:** इस प्रकार विवक्षा वश विद्यमान जीव का विनाश होता है और अविद्यमान जीव का उत्पाद भी। जिनेन्द्र देव का यह कथन परस्पर में विरुद्ध होने पर भी नय विवक्षा से अविरुद्ध है।। ५४।। **English:** Thus, from a certain perspective, an existent soul undergoes destruction and a non-existent one originates. This statement of the Jinas, though seemingly contradictory, is consistent within the framework of viewpoints (Nayas).

Verse 55 Prakrit: णेरइयतिरियमणुआ देवा इति णामसंजुदा पयडी। कुव्वंति सदो णासं असदो भावस्स उप्पादं।। ५५।। **Hindi:** नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव इन नामों से युक्त कर्मप्रकृतियां विद्यमान पर्याय का नाश करती हैं और अविद्यमान पर्याय का उत्पाद करतीं है।। ५५।। **English:** Karma-natures designated as hellish, sub-human, human, and celestial cause the destruction of an existing mode and the origination of a non-existing one.

Verse 56 Prakrit: उदयमेण य खयेण दुहिं मिस्सिदेहिं परिणामे। जुत्ता ते जीवगुणा बहुसु य अत्थेसु विच्छिण्णा।। ५६।। **Hindi:** जीव के जो भाव कर्मों के उदय, उपशम, क्षय और क्षयोपशम से तथा आत्मीय निज परिणामों से युक्त है वे उसके क्रमशः औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक और पारिणामिक नाम से प्रसिद्ध पांच सामान्य गुण हैं।। ५६।। **English:** The psychic states arising from the fruition, suppression, destruction, and destruction-suppression of karma, along with the soul's own inherent nature, constitute the five types of dispositions: Audayika, Aupashamika, Kshayika, Kshayopashamika, and Parinamika.

Verse 57 Prakrit: कम्मं वेदयमाणों जीवो भावं करेदि जारिसयं। सो तेण तस्स कत्ता हवदित्ति य सासणे पढिदं।। ५७।। **Hindi:** उदयागत द्रव्यकर्म का वेदन करने वाला जीव जैसा भाव करता है वह उसका कर्ता होता है ऐसा जिनशासन में कहा गया है।। ५७।। **English:** It is taught in the Jain doctrine that as a soul experiences the fruition of material karma, the specific disposition it adopts makes it the doer (Karta) of that disposition.

Verse 58 Prakrit: कम्मेण विणा उदयं जीवस्स ण विज्जदे उवसमं वा। खइयं खओवसमियं तम्हा भावं तु कम्मकंद।। ५८।। **Hindi:** यत द्रव्यकर्म के बिना आत्मा के रागादि विभावों का उदय और उपशम नहीं हो सकता तथा क्षायिक और क्षायोपशमिक भाव भी नहीं हो सकते अत जीव के उल्लिखित चारों भाव द्रव्यकर्म के किये हुए हैं।। ५८।। **English:** Since without material karma there can be no fruition, suppression, destruction, or destruction-suppression, these four dispositions of the soul are effectively produced by karma.

Verse 59 Prakrit: भावो जदि कम्मकदो अत्ता कम्मस्स होदि किध कत्ता। ण कुणदि अत्ता किंचिवि मुत्ता अण्णं सगं भावं।। ५९।। **Hindi:** यदि औदयिक आदि भाव द्रव्यकर्म के द्वारा किये हुए हैं तो आत्मा द्रव्यकर्म का कर्ता कैसे हो सकता है क्योंकि वह निजभाव को छोड़कर अन्य किसी का कर्ता नहीं है।। ५९।। **English:** [Question]: If these dispositions are produced by karma, how can the soul be the doer of karma? For the soul does not perform any action other than its own psychic state.

Verse 60 Prakrit: भावो कम्मणिमित्तं कम्मं पुण भावकारण हवदि। ण दु तेसिं खलु कत्ता ण विणा भूदा दु कत्तारं।। ६०।। **Hindi:** व्यवहार नय से जीव के औदयिक आदि भावों का कर्ता द्रव्यकर्म है और द्रव्यकर्म का कर्ता भावकर्म है परन्तु निश्चयनय से... वे दोनों - द्रव्यकर्म भावकर्म कर्ता के बिना भी नही होते हैं।। ६०।। **English:** Dispositions are caused by karma, and karma is caused by dispositions. From the absolute point of view, neither is the doer of the other, yet neither occurs without an efficient cause.

Verse 61 Prakrit: कुब्बं सगं सहावं अत्ता कत्ता सगस्स भावस्स। ण हि पोग्गलकम्माणं इदि जिणवयणं मुणेयव्वं।। ६१।। **Hindi:** "अपने निजभाव को करता हुआ आत्मा निजभाव का ही कर्ता है पुद्गल रुप द्रव्यकर्मों का कर्ता नही है" ऐसा जिनेन्द्र भगवान का वचन जानना चाहिये।। ६१।। **English:** One must understand the word of the Jina: "Performing its own nature, the soul is the doer of its own state; it is not the doer of material karmas."

Verse 62 Prakrit: कम्मं पि सगं कुव्वदि सेण सहावेण सम्ममप्पाणं। जीवो वि य तारिसओ कम्मसहावेण भावेण।। ६२।। **Hindi:** "जिस प्रकार कर्म स्वकीय स्वभाव द्वारा यथार्थ में अपने आपको करता हैं उसी प्रकार जीव द्रव्य भी स्वकीय अशुद्ध स्वभाव - रागादि परिणाम द्वारा अपने आपको करता है"।। ६२।। **English:** Just as karma truly performs itself through its own nature, so the soul substance performs itself through its own impure nature of attachment and aversion.

Verse 63 Prakrit: कम्मं कम्मं कुव्वदि जदि सो अप्पा करेदि अप्पाणं। किध तस्स फलं भुंजदि अप्पा कम्मं च देदि फलं।। ६३।। **Hindi:** यदि कर्म, कर्म का कर्ता है और आत्मा, आत्मा का कर्ता है तो आत्मा कर्म के फल को किस प्रकार भोगता है? और कर्म भी आत्मा को किस प्रकार फल देता है?।। ६३।। **English:** [Question]: If karma performs karma and the soul performs the soul, how does the soul experience the fruit of karma, and how does karma grant that fruit?

Verse 64 Prakrit: ओगाढगाढणिचिदो पोग्गलकायेहिं सब्बदो लोगो। सुहुमेहिं बादरेहिं णंताणतेहिं विविहेहिं।। ६४।। **Hindi:** यह लोक सब ओर से सूक्ष्म और बादर भेद को लिये हुए, विविध प्रकार के अनन्तानन्त पुदगलस्कन्धों से ठसाठस भरा हुआ है।। ६४।। **English:** This universe is densely packed in every direction with infinite material aggregates (Skandhas), both subtle and gross, of various types.

Verse 65 Prakrit: अत्ता कुणदि सहावं तत्थ गदा पोग्गला सहावेहिं। गच्छंति कम्मभावं अण्णोण्णागाहमवगाढा।। ६५।। **Hindi:** जब यह जीव अशुद्ध रागादि परिणाम को करता है तब उस जीव के स्थानों में नीर क्षीर की तरह एकावगाह होकर रहने वाले कार्मणवर्गणा रुप पुदगल स्कन्ध स्वय ही कर्मभाव को प्राप्त हो जाते हैं।। ६५।। **English:** When the soul undergoes impure dispositions, the material particles of karmic matter (Karmana-vargana), which interpenetrate the soul like milk and water, spontaneously transform into the state of karma.

Verse 66 Prakrit: जह पुग्गलदव्वाणं बहुप्पयारेहिं खंघणिव्वत्ती। अकदा परेहिं दिट्ठा तह कम्माणं वियाणाहि।। ६६।। **Hindi:** जिस प्रकार अन्य पुदगल द्रव्य में विविध प्रकार के स्कन्धों की रचना दूसरे द्रव्यों के द्वारा न की हुई स्वयमेव उत्पन्न देखी जाती है उसी प्रकार... कर्मरूप रचना स्वयमेव हो जाती है।। ६६।। **English:** Just as the

formation of various aggregates in other forms of matter is observed to happen spontaneously without external agents, know that the formation of karma in material substance occurs similarly.

Verse 67 Prakrit: जीवा पुग्गलकाया अण्णोण्णागाढगढ़णपडिबद्धा। काले विजुज्जमाणा सुहदुक्खं दिंति भुंजंति।। ६७।। **Hindi:** जीव और कर्म रूप पुद्गल स्कन्ध परस्पर में एकक्षेत्रावगाह के द्वारा अत्यन्त सघन सम्बन्ध को प्राप्त हो रहे हैं। जब वे उदयकाल में बिछुडने लगते हैं... तब जीव में सुख दुखादि का अनुभव होता है।। ६७।। **English:** Soul and material karmic aggregates are bound in a dense relationship of mutual interpenetration. When they separate at the time of fruition, they yield pleasure and pain, which the soul experiences.

Verse 68 Prakrit: तम्हा कम्मं कत्ता भावेण हि संजुदोद जीवस्स। भोत्ता दु हवदि जीवो चेदगभावेण कम्मफलं।। ६८।। **Hindi:** इतने कथन से यह बात सिद्ध हुई कि जीव के मिथ्यात्व रागादि भावों से युक्त द्रव्यकर्म, सुख-दुखादि रुप कर्मफल का कर्ता है परन्तु उसका भोक्ता चेतकभाव के कारण जीव ही है।। ६८।। **English:** Thus it is established that material karma, associated with the soul's impure states, is the producer of karmic fruits; however, the soul alone is the enjoyer of these fruits due to its sentient nature.

Verse 69 Prakrit: एवं कत्ता भोत्ता होज्झं अप्पा सगेहिं कम्मेहिं। हिंडति पारमपारं संसारं मोहसंहृण्णो।। ६९।। **Hindi:** इस प्रकार यह जीव अपने ही शुभाशुभ कर्मों से मोह के द्वारा आच्छन्न हो कर्ता-भोक्ता होता हुआ सान्त और अनन्त संसार में परिभ्रमण करता रहता है।। ६९।। **English:** In this manner, the soul, obscured by delusion, becomes a doer and enjoyer of its own auspicious and inauspicious karmas, wandering through the finite or infinite cycle of rebirth.

Verse 70 Prakrit: उबसंतखीणमोहो मग्गं जिणभासिदेण समुपगदो। णाणाणुमग्गचारी णिव्वाणपुरं वजदि धीरो।। ७०।। **Hindi:** जब यह जीव जिनेन्द्र प्रणीत आगम के द्वारा सम्यग्दर्शन, सम्यग्शान और सम्यक्चारित्र रुप मार्ग को प्राप्त हो... मोहनीय कर्म का उपशम अथवा क्षय करता है तब मोक्ष नगर को प्राप्त करता है।। ७०।। **English:** When the soul attains the path of Right Vision, Knowledge, and Conduct as taught by the Jinas, and suppresses or destroys deluding karma, that courageous soul enters the city of liberation.

Verse 71-72 Prakrit: एको चेव महप्पा सो दुवियप्पो तिलक्खणों होदि। चदुचंकमणो भणिदों पचग्गगुणप्पधाणों य।। हुक्कापक्कमजुत्तो उवजुत्तो सत्तमंगसब्भावों। अट्ठासओ णवत्थो जीवो दसट्ठाणगो भणिदों।। ७१-७२।। **Hindi:** वह जीव रुप महात्मा सामान्य की अपेक्षा एक प्रकार का है। ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग के भेद ये दो प्रकार का है। कर्मचेतना, कर्मफलचेतना और ज्ञानचेतना... उत्पत्ति, विनाश और ध्रौव्य से युक्त होने के कारण तीन प्रकार का है... सात भंगों से युक्त होने के कारण सात प्रकार का है। आठ कर्म अथवा आठ गुणों का आश्रय होने से आठ प्रकार का है। नव पदार्थ रूप प्रवृत्ति होने मे नव प्रकार का है और... दश भेदों से युक्त होने के कारण दश प्रकार का है।। ७१-७२।। **English:** The Great Soul is unitary by nature; twofold by cognitive application; threefold by types of consciousness or the triad of origination, destruction, and persistence; fourfold by states of existence; fivefold by psychic dispositions; sixfold by directions of movement; sevenfold by qualifying logic; eightfold by karma or attributes; ninefold by categories of reality; and tenfold by types of beings.

Verse 73 Prakrit: पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसबंधेहिं सब्वदो मुक्को। उड्ढं गच्छदि सेसा विदिसावज्जं गदिं जंति।। ७३।। **Hindi:** प्रकृति स्थिति अनुभाग और प्रदेश इन चार प्रकार के बन्धों से सर्वथा निर्मुक्त हुआ जीव केवल ऊपर की ओर जाता है।। ७३।। **English:** Completely liberated from the four types of

bondage—nature, duration, intensity, and quantity—the soul ascends only upwards. All other beings move in the six directions, excluding the four intermediate ones.

Verse 74 Prakrit: खंधा य खंघदेसा खंघपदेसा य होंति परमाणू। इदि ते चदुव्वियप्पा पुग्गलकाया मुणेयव्दा।। ७४।। **Hindi:** स्कन्ध, एकस्कन्ध, स्कन्धप्रदेश और परमाणु इस प्रकार पुदगल द्रव्य के चार भेद हैं।। ७४।। **English:** Aggregates (Skandha), portions of aggregates (Skandha-desha), spatial units of aggregates (Skandha-pradesha), and atoms (Paramanu)—these are the four forms of material substance.

Verse 75 Prakrit: खंधं सबलसमत्थं तस्स दु अद्धं मणंति देसोत्ति। अद्धद्धं ते पदेसो परमाणू चेव अविभागी।। ७५।। **Hindi:** समस्त परमाणुओं से मिलकर बना हुआ पिण्ड स्कन्ध, स्कन्ध से आधा स्कन्धदेश, स्कन्धदेश से आधा स्कन्धप्रदेश और अविभागी अंश को परमाणु कहते हैं।। ७५।। **English:** The whole mass of integrated atoms is the Aggregate; half of it is the Portion; half of that portion is the Spatial Unit; and the indivisible part is the Atom.

Verse 76 Prakrit: बादरसुहुमगदाणं खधाणं पुग्गलोत्ति बबहारो। ते होंति छप्पयारा तेलोक्क जेहिं णिप्पण्ण।। ७६।। **Hindi:** बादर और सूक्ष्म परिणमन को प्राप्त हुए स्कन्धों का पुदगल शब्द से व्यवहार होता है। वे स्कन्ध १ बादरबादर २ बादर, ३ बादरसुक्ष्म, ४ सुक्ष्मबादर, ५ सूक्ष्म और ६ सूक्ष्मसूक्ष्म के भेद से छह प्रकार के हैं।। ७६।। **English:** Aggregates attaining gross or subtle transformation are called Matter. They are of six types: gross-gross, gross, gross-subtle, subtle-gross, subtle, and subtle-subtle. These six compose the three worlds.

Verse 77 Prakrit: सव्वेसिं खंधाणं जो अंतो तं वियाण परमाणू। सो सस्सदो असद्दो एक्को अविभागी मुत्तिभवो।। ७७।। **Hindi:** समस्त स्कन्धों का जो अन्तिम भेद है उसे परमाणु जानना चाहिये। वह परमाणु नित्य है, शब्द रहित है, एक है अविभागी है।। ७७।। **English:** Know that the ultimate indivisible part of all aggregates is the Atom. It is eternal, soundless, unitary, indivisible, and the cause of material form.

Verse 78 Prakrit: आदेसमत्तमुत्तो धादुचदुक्कस्स कारणं जो दु। सो णेओ परमाणू परिणामगुणो सयमसदद्दो।। ७८।। **Hindi:** जो गुणगुणी के संशादि भेदों से मूर्तिक है, पृथिवी, जल अग्नि और वायु का समान कारण है, परिणमनशील है और स्वयं शब्द रहित है उसे परमाणु जानना चाहिये।। ७८।। **English:** That which is material by its attributes, is the cause of the four elements (earth, water, fire, air), is capable of transformation, and is itself soundless, is known as the Atom.

Verse 79 Prakrit: सद्दो खधप्पभवो खंधो परमाणुसंगसंघादो। पुट्ठेसु तेसु जायदि सद्दो उप्पादगो णियदो।। ७९।। **Hindi:** शब्द स्कन्ध से उत्पन्न होता है... जब वे स्कन्ध परस्पर स्पर्श को प्राप्त होते हैं तभी शब्द उत्पन्न होता है।। ७९।। **English:** Sound originates from aggregates; an aggregate is a collection of atoms. Sound is produced only when these aggregates come into mutual contact.

Verse 80 Prakrit: णिच्चो णाणवकासो ण सावकासो पदेसदो मेत्ता। खंघाणं पि य कत्ता पविहत्ता कालखंधाण।। ८०।। **Hindi:** वह परमाणु अपने एक प्रदेश रुप परिणमन से कभी नष्ट नहीं होता इसलिये नित्य है... स्कन्धों का कर्ता है और... काल का तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रुप चतुर्विध संख्याओं का विभाजक है।। ८०।। **English:** The atom is eternal as it never deviates from its single spatial unit; it facilitates the space for attributes, is the creator of aggregates, and the divider of time and substantial measures.

Verse 81 Prakrit: एयरसवण्णगंधं दो फासं सद्दकारणमसदं। खधंतरिदं दव्वं परमाणूं तं वियाणेहिं।। ८१।। **Hindi:** जो द्रव्य एकरस, एकवर्ण, एक गन्ध और दो स्पर्शों से सहित है, शब्द का कारण है, स्वयं शब्द से रहित है और स्कन्ध से जुदा है... उसे परमाणु जानो।। ८१।। **English:** Know that substance which possesses one taste, one color, one smell, and two touches, which causes sound yet is soundless itself, and is distinct from an aggregate, as the Atom.

Verse 82 Prakrit: उवभोज्जमिंदियेहिं य इंदिय काया मणो य कम्माणि। जं जं हवदि मुत्तमण्णं तं सब्बं पुग्गलं जाणे।। ८२।। **Hindi:** पाँचों इन्द्रियों के उपभोग्य विषय, पांच इन्द्रियां, शरीर, मन, कर्म तथा अन्य जो कुछ मूर्तिक द्रव्य है वह सब पुदगल द्रव्य ज़ानना चाहिये।। ८२।। **English:** The objects of the five senses, the senses themselves, the body, mind, karmas, and whatever else is material must be known as Matter (Pudgala).

Verse 83 Prakrit: धम्मत्थिकायमरसं अवण्णगंधं असद्दमप्फासं। लोगोगाढं पुट्ठं पिहुलमसंखादियपदेसं।। ८३।। **Hindi:** धर्मास्तिकाय रस रहित है, वर्ण रहित है, गन्ध रहित है, शब्द रहित है, स्पर्श रहित है, समस्त लोक में व्याप्त है... और असंख्यात प्रदेशी है।। ८३।। **English:** The Principle of Motion (Dharmastikaya) is devoid of taste, color, smell, sound, and touch; it pervades the entire universe and is characterized by innumerable spatial units.

Verse 84 Prakrit: अगुरुलघुगेहिं सया तेहिं अणंतहिं परिणदं णिच्चं। गदिकिरियाजुत्ताण कारणभूदं सयमकज्जं।। ८४।। **Hindi:** वह धर्मास्तिकाय अपने अनन्त अगुरुलधु गुणों के द्वारा निरन्तर परिणमन करता रहता है, स्वयं गति क्रिया से युक्त जीव और पुदगलों की गति क्रिया का कारण है।। ८४।। **English:** Dharmastikaya transforms eternally through its infinite Agurulaghu qualities; it is the auxiliary cause of motion for souls and matter, yet is itself without motion.

Verse 85 Prakrit: उदयं जह मच्छाणं गमणाणुग्गहयरं हवदि लोए। तह जीवपुग्गलाणं धम्मं दव्वं वियाणेहि।। ८५।। **Hindi:** जिस प्रकार लोक में जल मछलियों के गमन करने में अनुग्रह करता है उसी प्रकार धर्मद्रव्य जीव और पुद्गल द्रव्य के गमन करने में अनुग्रह करता है।। ८५।। **English:** Just as water in the world facilitates the movement of fish, know that the substance of Dharma facilitates the movement of souls and matter.

Verse 86 Prakrit: जह हवदि धम्मदव्वं तह तं जाणेह दव्वमधमक्खं। ठिदिकिरियाजुत्ताणं कारणमूदं तु पुठवीव।। ८६।। **Hindi:** जैसा धर्मास्तिकाय का स्वरूप ऊपर कहा गया है वैसा ही अधर्मास्तिकाय का स्वरूप जानना चाहिये। विशेषता इतनी ही है कि यह... ठहरने में पृथिवी की तरह कारण है।। ८६।। **English:** Know the Principle of Rest (Adharmastikaya) to be similar to Dharma in nature, with the specific distinction that it serves as the auxiliary cause for the stationarity of souls and matter, like the earth.

Verse 87 Prakrit: जादो अलोगलोगो तेसिं सब्भावदो य गमणठिदी। दो वि य मया विभत्ता अविभत्ता लोयमेत्ता य।। ८७।। **Hindi:** जिनके सद्भाव से लोक और अलोक का विभाग हुआ है तथा गमन और स्थिति होती है वे धर्म और अधर्म दोनों ही अस्तिकाय परस्पर विभक्त हैं।। ८७।। **English:** By the presence of these two, the division between Loka and Aloka is established; motion and rest occur through them. Dharma and Adharma are distinct entities yet co-extensive with the universe.

Verse 88 Prakrit: ण य गच्छदि धम्मत्थी गमणं ण करेदि अण्णदवियस्स। हवदि गदी सप्पसरो जीवाणं पुग्गलाणं च।। ८८।। **Hindi:** धर्मास्तिकाय न स्वयं गमन करता है और न प्रेरक होकर अन्य द्रव्य का गमन कराता है। वह केवल उदासीन रहकर ही जीवों और पुदगलों की गति का प्रवर्तक होता है।। ८८।। **English:**

Dharmastikaya neither moves itself nor compels other substances to move. It is merely a passive condition for the motion of souls and matter.

Verse 89 Prakrit: विज्जदि जेसिं गमणं ठाणं पुण तेसिमेव संभवदि। ते सगपरणामेहि दु गमणं ठाणं च कुब्बंति।। ८९।। **Hindi:** जिन जीव और पुदगलों का चलना तथा स्थिर होना होता है उन्हीं का फिर स्थिर होना तथा चलना होता है। इससे सिद्ध होता है कि वे अपने-अपने उपादान कारणों से ही गमन तथा स्थिति करते हैं।। ८९।। **English:** Souls and matter move and rest by their own inherent capacity for transformation; Dharma and Adharma are merely external auxiliary causes for such states.

Verse 90 Prakrit: सब्वेसिं जीवाणं सेसाणं तह य पुग्गलाणं च। जं देदि विवरमखिलं तं लोए हवदि आयासं।। ९०।। **Hindi:** समस्त जीवों और पुद्गलों को तथा धर्म, अधर्म और काल को जो सम्पूर्ण अवकाश देता है... लोकाकाश है।। ९०।। **English:** That which provides space for all souls, matter, dharma, adharma, and time is the Universe-Space (Lokakasha).

Verse 91 Prakrit: जीवा पुग्गलकाया धम्माधम्मा व लोगदोणण्णा। तत्तो अणण्णमण्णं आयासं अंतवदिरित्तं।। ९१।। **Hindi:** जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और काल ये पाँचों लोक से जुदे नहीं हैं... परन्तु आकाश लोक से अपृथक है और पृथक भी है।। ९१।। **English:** Souls, matter, dharma, adharma, and time are not separate from the universe; however, space is both identical with and distinct from the universe, extending infinitely as Aloka.

Verse 92 Prakrit: आगास अवगासं गमणट्ठिदिकारणेहिं देदि जदि। उड्ढं गदिप्पधाणा सिद्धा चिट्ठंति किध तत्थ।। ९२।। **Hindi:** यदि ऐसा माना जाय कि आकाश ही अवकाश देता है और आकाश ही गमन तथा स्थिति का कारण है तो फिर ऊर्ध्वगति में जाने वाले सिद्ध परमेष्ठी लोकाग्र पर ही क्यों रुक जाते हैं?।। ९२।। **English:** If space were the cause of motion and rest as well as offering room, why would the liberated souls, who tend to move upwards, stop at the summit of the universe?

Verse 93 Prakrit: जम्हा उवरिट्ठाणं सिद्धाणं जिणवरेहिं पण्णत्तं। तम्हा गमणट्ठाणं आयासे जाण णत्थि त्ति।। ९३।। **Hindi:** यतः जिनेन्द्र भगवान् ने सिद्धों का अवस्थान लोक के अग्रभाग में ही बतलाया है अतः आकाश में गमन और स्थिति का हेतुत्व नही पाया जा सकता।। ९३।। **English:** Since the Jinas have declared that the Siddhas reside at the summit of the universe, know that space cannot be the auxiliary cause of motion and rest.

Verse 94 Prakrit: जदि हवदि गमणहेदू आगासं ठाणकारणं तेसिं। पसजदि अलोगहाणी लोगस्स य अंतपरिवुड्ढी।। ९४।। **Hindi:** यदि आकाश को जीव और पुदगलों की गति तथा स्थिति का कारण माना जायगा तो अलोक की हानि होगी और लोक के अन्त की वृद्धि भी।। ९४।। **English:** If space were the cause of motion and rest, the non-universe (Aloka) would vanish and the boundary of the universe (Loka) would expand infinitely.

Verse 95 Prakrit: तम्हा धम्माधम्मा गमणट्ठिदिकारणाणि णागासं। इदि जिणवरेहिं भणिदं लोगसहावं सुणंताणं।। ९५।। **Hindi:** "इसलिए धर्म और अधर्म द्रव्य ही गमन तथा स्थिति के कारण हैं, आकाश नहीं है," ऐसा जिनेन्द्र देव ने लोक का स्वभाव सुनने वालों से कहा है।। ९५।। **English:** Therefore, Dharma and Adharma are the causes of motion and rest, not space. Thus have the Jinas spoken to those who seek the nature of the universe.

Verse 96 Prakrit: धम्माधम्मागासा अपुधब्भूदा समाणपरिमाणा। पुधगुवलद्विविसेसा करंति एगत्तमण्णत्तं।। ९६।। **Hindi:** धर्म, अधर्म, और लोकाकाश ये तीनों ही द्रव्य एक क्षेत्रावगाही होने से अपृथग्भूत है, समान परिणाम

वाले है और अपने अपने विशेष स्वभाव को लिये हुए हैं।। ९६।। **English:** Dharma, Adharma, and Universe-Space are interpenetrating and equal in extent; they manifest unity in space but distinction in their specific functions.

Verse 97 Prakrit: आयासकालजीवा धम्माधम्मा य मुत्तिपरिहीणा। मुत्तं पुग्गलदव्वं जीवो खलु चेदणों तेसु।। ९७।। **Hindi:** आकाश, काल, जीव, धर्म और अधर्म ये पाच द्रव्य मूर्ति... से रहित है, केवल पुदगल द्रव्य मूर्त है। उक्त छहों द्रव्यों में जीवद्रव्य ही चेतन है।। ९७।। **English:** Space, time, soul, dharma, and adharma are formless (amurta); only matter is material (murta). Among these six, only the soul substance is sentient.

Verse 98 Prakrit: पुग्गलकाया सहठ सक्किरिया हवंति ण य सेसा। पुग्गलकावा जीवा खंधा खलु कालकरणा दु।। ९८।। **Hindi:** जीव द्रव्य और पुदगल द्रव्य ही क्रिया सहित हैं, अवशिष्ट चार द्रव्य क्रियासहित नहीं हैं।। ९८।। **English:** Only soul and matter are active (sakriya); the remaining four substances are inactive. Souls and material aggregates act in dependence upon Time as a condition.

Verse 99 Prakrit: जे खलु इंदियगेज्झा विसया जीवेहिं हुंति ते मुत्ता। सेसं हवदि अमुत्तं चित्तं उभयं समादियदि।। ९९।। **Hindi:** जीव जिन पदार्थों को इन्द्रिय के द्वारा ग्रहण करते हैं - जानते हैं वे मूर्तिक हैं और बाकी के अमूर्तिक हैं।। ९९।। **English:** Those objects which are perceptible by the senses are material; the rest are formless. The mind perceives both types of entities.

Verse 100 Prakrit: कालो परिणामभवो परिणामों दव्वकालसंभूदो। दोण्हं एस सहावो कालो खणभंगुरों णियदो।। १००।। **Hindi:** व्यवहारकाल जीव पुदगलों के परिणाम से उत्पन्न है तथा जीव पुद्गलों का परिणाम निश्चय कालाणु रुप कालद्रव्य से संभूत है।। १००।। **English:** Relative time arises from the transformations of souls and matter, while those transformations themselves arise in dependence on the substance of absolute Time. Relative time is momentary, whereas absolute Time is eternal.

Verse 101 Prakrit: कालो त्ति य वबदेसो सब्भावपरुवगों हवदि णिच्चों। उप्पण्णप्पद्धंसी अवरो दीहंतरट्ठाई।। १०१।। **Hindi:** "यह काल है" इस प्रकार जिसका व्यपदेश - उल्लेख होता है वह अपना सद्भाव बतलाता हुआ नित्य द्रव्य है।। १०१।। **English:** The designation 'Time' describes an eternally existent substance. The other, relative time, originates and perishes, yet remains stable as a continuity of moments.

Verse 102 Prakrit: एदे कालागासा धम्माधम्मा य पुग्गला जीवा। लब्भंति दव्वसण्णं कालस्स दु णत्थि कायत्तं।। १०२।। **Hindi:** यही सब जीव, पुदगल, धर्म, अधर्म काल और आकाश द्रव्य व्यपदेश को प्राप्त हैं... परन्तु... कालद्रव्य में बहुप्रदेशी होने से... अस्तिकायपना नहीं है।। १०२।। **English:** Soul, matter, dharma, adharma, space, and time are all substances; however, time lacks multi-spatiality (Astikaya-tva) because it consists of a single spatial unit.

Verse 103 Prakrit: एवं पवयणसारं पंचत्थियसगहं वियाणित्ता। जो मुवदि रागदोसे सो गाहदि दुक्खपरिमोक्खं।। १०३।। **Hindi:** इस प्रकार पंचास्तिकाय के संग्रह स्वरूप द्वादशांग के सार को जानकर जो राग और द्वेष छोड़ता है वह संसार के दु खों से छुटकारा पाता है।। १०३।। **English:** Thus, having understood this compendium of the five multi-spatial entities—the essence of the scriptures—he who abandons attachment and aversion attains liberation from mundane suffering.

Verse 104 Prakrit: मुणिऊण एतदट्ठं तदणुगमणुज्झदो णिहदमोहो। पसमियरागददोसो हवदि हदपरावरों जीवी।। १०४।। **Hindi:** इस शास्त्र के रहस्यभूत शुद्ध चैतन्य स्वरूप आत्मा को जानकर जो पुरुष तन्मय होने का प्रयत्न करता है वह... मुक्त हो जाता है।। १०४।। **English:** Knowing the secret of this scripture, which is

the pure sentient soul, and striving to become absorbed in it, a person destroys delusion and becomes a liberated being.

Part II: The Moksha-Marga (Path to Liberation)

Verse 105 Prakrit: अभिवंदिऊण सिरसा अपुणब्भवकारण महावीरं। तेसिं पयत्थमग्गं मग्गं मोक्खस्स वोच्छामि।। १०५।। **Hindi:** अब मैं मोक्ष के कारणभूत श्री महावीर स्वामी को मस्तक द्वारा नमस्कार कर मोक्ष के मार्ग स्वरूप नव पदार्थों को कहूँगा।। १०५।। **English:** Having bowed my head to Lord Mahavira, the cause of the cessation of rebirth, I shall expound the path to liberation through the nine categories of reality.

Verse 106 Prakrit: सम्मत्तणाणजुत्तं चारित्तं रागदोसपरिहीणं। मोक्खस्स हवदि मग्गो भव्वाणं लद्धबुद्धीणं।। १०६।। **Hindi:** सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान से युक्त रागद्वेष रहित सम्यक्चारित्र मोक्ष का मार्ग है। यह मोक्ष का मार्ग स्व-पर भेदविज्ञानी भव्यजीवों को ही प्राप्त होता है।। १०६।। **English:** Right Conduct, free from attachment and aversion and accompanied by Right Vision and Right Knowledge, constitutes the path to liberation. This path is attained only by noble souls who possess the wisdom to distinguish the Self from the non-Self.

Verse 107 Prakrit: सम्मत्तं सद्दहणं भावाणं तेसिमधिगमो णाणं। चारित्तं समभावो विसयेसु विरूढमग्गाणं।। १०७।। **Hindi:** पूर्वोक्त जीवादि पदार्थों का श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन है, उन्हीं का ज्ञान होना सम्यग्ज्ञान है और पञ्चेन्द्रियों के इष्ट-अनिष्ट विषयों में समताभाव धारण करना सम्यक्चारित्र है।। १०७।। **English:** Belief in the aforementioned categories such as the Soul is Right Vision; their accurate comprehension is Right Knowledge; and maintaining equanimity toward the agreeable and disagreeable objects of the senses is Right Conduct.

Verse 108 Prakrit: जीवाजीवा भावा पुण्णं पावं च आसवं तेसिं। संवरणिज्जरबंधो मोक्खो व हवंति ते अट्ठा।। १०८।। **Hindi:** जीव, अजीव पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध और मोक्ष ये नौ पदार्थ हैं।। १०८।। **English:** Soul, Non-soul, Merit, Demerit, Inflow, Stoppage, Shedding, Bondage, and Liberation—these are the nine categories of reality.